किसान प्रक्षेत्र दिवस

(पूसा सरसों 30 (PM 30) पर विशेष कार्यक्रम)

स्थान: ग्राम सुमावली, विकासखण्ड जौरा

जिला मुरैना (म.प्र.)

किसान कल्याण एवं
कृषि विकास विभाग,
मध्य प्रदेश शासन, भोपाल

Madhya Bharat Consortium

of Farmers Producer Company Limited, Bhopal

E-5 / 74, Arera Colony, Near Bittan Market, Bhopal, Madhya Pradesh - 462016,
Phone - 0755 4009566, +91 9425 469 672, Email - mbcfpcl@gmail.com,
Website – www.mbcfpcl.org

किसान प्रक्षेत्र दिवस – पूसा सरसों 30 (PM 30) पर विशेष कार्यक्रम

स्थान: ग्राम सुमावली, विकासखण्ड जौरा, जिला मुरैना (म.प्र.)

दिनांक: 26 फरवरी 2026

आयोजक: मध्य भारत कंसोर्टियम फॉर फार्मर प्रोड्यूसर लिमिटेड

सहयोगी संस्था - किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग, मध्य प्रदेश

कार्यक्रम मे उपस्थिति - 205 किसान

1. प्रस्तावना

मध्य भारत कंसोर्टियम फॉर फार्मर प्रोड्यूसर लिमिटेड द्वारा क्षेत्रीय किसानों की आय में वृद्धि, उन्नत तकनीकों का प्रसार तथा नई किस्मों के प्रदर्शन के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रमों का नियमित आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में ग्राम सुमावली, विकासखण्ड जौरा, जिला मुरैना (मध्यप्रदेश) में सरसों की उन्नत किस्म **पूसा सरसों 30 (PM 30)** पर केंद्रित एक दिवसीय किसान प्रक्षेत्र दिवस (Farmers' Field Day) आयोजित किया गया।

यह कार्यक्रम क्षेत्र के सरसों उत्पादक किसानों के लिए तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त करने, अनुभव साझा करने तथा नई किस्म का प्रत्यक्ष अवलोकन करने का एक महत्वपूर्ण अवसर सिद्ध हुआ।

तिलहन उत्पादन को बढ़ावा देने और किसानों को नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकों से जोड़ने के उद्देश्य से मध्य भारत कंसोर्टियम फॉर फार्मर प्रोड्यूसर लिमिटेड ने ग्राम सुमावली में किसान प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था **पूसा सरसों 30 (PM 30)** – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित सरसों की नई किस्म।

सरसों भारत की प्रमुख तिलहन फसल है और मध्य भारत क्षेत्र में इसकी खेती का विशेष महत्व है। बढ़ती मांग तथा किसानों की आय में वृद्धि के लिए उच्च उत्पादन क्षमता वाली किस्मों का प्रचार-प्रसार आवश्यक है। इसी दृष्टिकोण से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम का आयोजन मध्य भारत कंसोर्टियम फॉर फार्मर प्रोड्यूसर लिमिटेड द्वारा किया गया। ग्राम सुमावली एवं आसपास के 4–5 ग्रामों में संचालित किसान पाठशाला कार्यक्रम से जुड़े लगभग 205 प्रगतिशील

किसान इसमें सक्रिय रूप से शामिल रहे। तकनीकी सहयोग एवं विशेषज्ञ मार्गदर्शन कृषि विज्ञान केन्द्र (KVK) के वरिष्ठ वैज्ञानिकों तथा कृषि विभाग और ATMA के अधिकारियों द्वारा प्रदान किया गया।

इस रिपोर्ट में कार्यक्रम की पृष्ठभूमि, उद्देश्य, आयोजन विवरण, तकनीकी सत्र, किसानों के अनुभव, संस्थागत सहयोग, कार्यक्रम के मुख्य निष्कर्ष तथा भविष्य की कार्ययोजना का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है।

2. कार्यक्रम की पृष्ठभूमि एवं आवश्यकता

मुरैना तथा आसपास के क्षेत्रों में सरसों एक प्रमुख तिलहनी फसल है, जो किसानों की नकद आय का महत्वपूर्ण स्रोत है। पारंपरिक किस्मों एवं प्रबंधन पद्धतियों के कारण कई बार किसानों को संभावित उपज नहीं मिल पाती। साथ ही रोग–कीट प्रकोप, असंतुलित उर्वरक उपयोग, बुवाई में त्रुटियाँ और अव्यवस्थित सिंचाई जैसी समस्याओं के कारण उत्पादकता प्रभावित होती है।

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI) एवं अन्य राष्ट्रीय संस्थानों द्वारा विकसित **पूसा सरसों 30 (PM 30)** जैसी उन्नत किस्में उच्च उत्पादकता, बेहतर बीज गुणवत्ता, अधिक शाखाकारण, अधिक फलियाँ एवं रोग–प्रतिरोधकता जैसी विशेषताओं से युक्त हैं। इन किस्मों को किसान स्तर तक पहुँचाने, वास्तविक खेत परिस्थितियों में प्रदर्शन कराने तथा किसानों का विश्वास बढ़ाने के लिए अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (Frontline Demonstration) तथा किसान प्रक्षेत्र दिवस जैसे कार्यक्रम अत्यंत प्रभावी माध्यम सिद्ध होते हैं।

इसी संदर्भ में मध्य भारत कंसोर्टियम, राष्ट्रीय खाद्य तेल मिशन के तहत मुरैना जिले के 7 ग्रामों में 500 किसानों के साथ कार्य कर रहा है। इस पहल के अंतर्गत उन्नत किस्म **पूसा सरसों 30 (PM 30)** के 118 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाए गए हैं। किसानों को समन्वित पोषण एवं कीट प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया गया तथा वर्मी कम्पोस्ट बैग का वितरण भी किया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत ग्राम सुमावली में **पूसा सरसों 30 (PM 30)** के 15 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाए गए। इसके आधार पर दिनांक **26 फरवरी 2026** को एक दिवसीय किसान प्रक्षेत्र दिवस आयोजित किया गया, ताकि अधिकाधिक किसान इस किस्म की क्षमता को प्रत्यक्ष रूप से देख सकें और वैज्ञानिक प्रबंधन तकनीकों को समझ सकें।

3. कार्यक्रम का उद्देश्य

किसान प्रक्षेत्र दिवस के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे:

1. किसानों को सरसों की नई उन्नत किस्म **पूसा सरसों 30 (PM 30)** की विशेषताओं, उत्पादक क्षमता और अनुकूलता के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करना।
2. वैज्ञानिक प्रबंधन तकनीकों जैसे बीज उपचार, कतारों में बुवाई, संतुलित पोषण एवं कीट प्रबंधन का प्रशिक्षण देना।

3. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (FLD) प्लॉटों के माध्यम से खेत पर ही किस्म की वास्तविक स्थिति, पौधों की वृद्धि, शाखाकारण, फलियों की संख्या एवं दानों की गुणवत्ता का प्रदर्शन करना।
4. किसानों को बीज उपचार, उचित बुवाई विधि, कतारों में बुवाई, संतुलित एवं समन्वित पोषण प्रबंधन (INM), समन्वित कीट एवं रोग प्रबंधन (IPM) तथा सिंचाई प्रबंधन जैसी उन्नत तकनीकों का व्यवहारिक प्रशिक्षण देना।
5. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (Frontline Demonstration) प्लॉट का निरीक्षण कर किसानों को प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करना, साथ ही किसानों के बीच पारस्परिक संवाद एवं अनुभव–साझा कर नई तकनीकों को अपनाने में विश्वास तथा उत्साह बढ़ाना।
6. कृषि विज्ञान केन्द्र (KVK), कृषि विभाग, ATMA एवं मध्य भारत कंसोर्टियम जैसे संस्थानों के बीच समन्वय बढ़ाकर क्षेत्रीय स्तर पर एक संगठित तकनीकी–समर्थन तंत्र विकसित करना तथा किसानों को विभागीय योजनाओं और तकनीकी सहयोग से जोड़ना।
7. सामूहिक प्रयासों से क्षेत्र में सरसों उत्पादन बढ़ाने की प्रेरणा देना।

4. कार्यक्रम का आयोजन एवं भागीदारी

4.1. स्थान और समय

कार्यक्रम का आयोजन दिनांक **26 फरवरी 2026** को ग्राम सुमावली के *लीड फार्मर* श्री पाण्डेय जी के खेत पर किया गया। इसमें ग्राम सुमावली तथा आसपास के 4–5 ग्रामों के लगभग **205 किसानों** ने भाग लिया।

चयनित किसानों के खेतों पर स्थापित **पूसा सरसों 30 (PM 30)** के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (Frontline Demonstration) प्लॉटों के आसपास मुख्य कार्यक्रम स्थल बनाया गया। इसका उद्देश्य यह था कि किसान सीधे खेत में खड़ी फसल का अवलोकन कर सकें। साथ ही, समन्वित पोषण एवं कीट प्रबंधन के अंतर्गत बनाए गए **वर्मी कम्पोस्ट पिट, पाँच पत्ती घोल, कंडा पानी एवं जीवामृत** को भी देख सकें और विशेषज्ञों से तत्काल तकनीकी चर्चा कर सकें।

4.2. प्रमुख अतिथि एवं विशेषज्ञ

कार्यक्रम में निम्न प्रमुख विशेषज्ञ एवं अधिकारी उपस्थित रहे:

a. डॉ. कंषाना, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र (KVK)
b. डॉ. तोमर, वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र (KVK)
c. श्री महोरिया, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी (SADO), कृषि विभाग
d. डॉ. अजय भदोरिया, परियोजना निदेशक, आत्मा (PD ATMA)
e. मध्य भारत कंसोर्टियम के प्रतिनिधि, किसान पाठशाला समन्वयक एवं स्थानीय जनप्रतिनिधि

इन सभी विशेषज्ञों ने मिलकर कार्यक्रम के विभिन्न तकनीकी एवं जागरूकता सत्रों का संचालन किया।

5. तकनीकी सत्र एवं फील्ड विज़िट

5.1. अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन प्लॉटों का भ्रमण

कार्यक्रम की शुरुआत किसानों द्वारा लगाए गए **पूसा सरसों 30 (PM 30) के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन प्लॉटों** के भ्रमण से हुई। विशेषज्ञों ने किसानों के साथ मिलकर पौधों की ऊँचाई, शाखा फुटन की संख्या, प्रति पौधा फलियाँ, प्रति फली दानों की संख्या तथा दानों के आकार आदि का विश्लेषण किया। किसानों ने स्वयं यह अनुभव साझा किया कि –

- ✓ PM 30 किस्म में **शाखा फुटन अधिक** है,
- ✓ प्रति पौधा फलियों की संख्या पारंपरिक किस्मों की तुलना में अधिक दिखाई दे रही है,
- ✓ दानों का आकार अपेक्षाकृत **बड़ा और भरा हुआ** है,
- ✓ पौधों की वृद्धि समान एवं सशक्त दिख रही है।

कई किसानों ने बताया कि मध्य भारत कंसोर्टियम द्वारा संचालित किसान पाठशाला के माध्यम से उन्हें **उच्च गुणवत्ता वाला बीज**, **बीज उपचार की जानकारी**, **अनुशंसित बुवाई दूरी**, और **उर्वरक एवं कीट प्रबंधन** की जानकारी समय पर मिल गई, जिसके कारण फसल की वर्तमान स्थिति अत्यंत संतोषजनक है और अनुमानित उत्पादन पारंपरिक किस्मों से लगभग **40 प्रतिशत अधिक** होने की संभावना है।

5.2. बीज उपचार एवं बुवाई तकनीक पर प्रशिक्षण

डॉ. कंषाना एवं डॉ. तोमर ने खेत पर ही प्रदर्शन के माध्यम से किसानों को निम्नलिखित विषयों पर प्रशिक्षण दिया:

बीज उपचार:

- ➢ रोगनाशी दवाओं से बीज उपचार की आवश्यकता एवं लाभ,
- ➢ अनुशंसित रसायनों की मात्रा एवं विधि,
- ➢ बीज उपचार के कारण प्रारंभिक रोगों की रोकथाम और समान अंकुरण में सहायता।

बुवाई की विधि:

- कतारों में बुवाई, कतार से कतार तथा पौधे से पौधे की अनुशंसित दूरी,
- सीड–ड्रिल अथवा देसी कूंटी का व्यवस्थित उपयोग,
- समय पर बुवाई और जुताई–हराई की उचित व्यवस्था।

समन्वित पोषण प्रबंधन (INM):

- नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश एवं गंधक का संतुलित उपयोग,
- जैव उर्वरकों एवं कार्बनिक खाद के उपयोग के लाभ,
- सूक्ष्म पोषक तत्वों की भूमिका।

समन्वित कीट एवं रोग प्रबंधन (IPM):

- तिलहरी, दाना झुलसा, पाउडरी मिल्ड्यू आदि रोगों की पहचान,
- माहू (अफिड) और अन्य प्रमुख कीटों का एकीकृत प्रबंधन,
- फसल अवशेष प्रबंधन एवं स्वच्छ खेती की आदतें।

5.3. सिंचाई एवं जल प्रबंधन

मध्य भारत कंसोर्टियम विशेषज्ञों ने सरसों में *क्रिटिकल स्टेज* पर सिंचाई के महत्व पर बल दिया। यह बताया गया कि उचित समय पर एक–दो सिंचाइयाँ फली एवं दाने के विकास को अत्यधिक प्रभावित करती हैं और पानी की कमी या अधिकता दोनों ही उपज को नुकसान पहुँचा सकती हैं। खेत स्तर पर **जल–संरक्षण संरचनाओं**, सूक्ष्म सिंचाई (जहाँ संभव हो) तथा वर्षा–जल के बेहतर उपयोग पर भी चर्चा की गई।

6. किसानों के अनुभव एवं फीडबैक

किसानों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और नई किस्म को अपनाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। उन्होंने भरोसा जताया कि मध्य भारत कंसोर्टियम द्वारा निरंतर तकनीकी सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलने से उनकी आय में वृद्धि होगी। प्रक्षेत्र दिवस के दौरान कई किसानों ने खुलकर अपने अनुभव साझा किए। प्रमुख बिंदु इस प्रकार रहे:

- ✓ किसान पाठशाला के माध्यम से **बीज की समय पर उपलब्धता** तथा तकनीकी मार्गदर्शन मिलने से किसान–स्तर पर प्रयोग अपनाना आसान हुआ।
- ✓ पारंपरिक किस्मों की तुलना में PM 30 में **अधिक शाखाकारण**, **घनी फलियाँ** और **बेहतर दाना** देखने को मिला।
- ✓ प्रशिक्षण के कारण किसानों ने पहली बार व्यवस्थित बीज उपचार और कतारों में बुवाई की तकनीक अपनाई, जिससे फसल का **स्टैंड बेहतर** रहा।
- ✓ किसानों ने अनुमान व्यक्त किया कि यदि मौसम अनुकूल रहा तो उन्हें लगभग **40 प्रतिशत अधिक उत्पादन** प्राप्त हो सकता है, जिससे उनकी शुद्ध आय में स्पष्ट वृद्धि होगी।
- ✓ कुछ किसानों ने सुझाव दिया कि आने वाले वर्षों में और अधिक क्षेत्र में PM 30 और अन्य उन्नत किस्मों का बीज उपलब्ध कराया जाए तथा फसल कटाई के समय **कटाई–पश्चात प्रबंधन एवं मूल्य संवर्धन** पर भी प्रशिक्षण आयोजित किया जाए।

7. विभागीय योजनाएँ एवं संस्थागत सहयोग

फील्ड विज़िट और तकनीकी सत्र के बाद **वरिष्ठ कृषि अधिकारी (SADO) श्री महोरिया** एवं **परियोजना निदेशक आत्मा (PD ATMA) डॉ. अजय भदोरिया** ने किसानों को कृषि विभाग एवं ATMA द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं, अनुदान कार्यक्रमों, बीज–वितरण, प्रदर्शनी योजनाओं, फसल बीमा एवं किसान–उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे

में जानकारी दी।

उन्होंने किसानों से अपील की कि वे विभाग द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली सुविधाओं जैसे – उन्नत बीज, रसायन, मृदा परीक्षण, डेमो प्लॉट, कृषक प्रशिक्षण, किसान भ्रमण आदि का अधिकतम लाभ उठाएँ और समूह के रूप में कार्य कर लागत घटाने एवं बाजार–भाव बढ़ाने की दिशा में आगे बढ़ें।

मध्य भारत कंसोर्टियम की ओर से यह संकल्प दोहराया गया कि संगठन किसानों को निरंतर **तकनीकी सहयोग, गुणवत्ता–युक्त बीज एवं इनपुट आपूर्ति, फसल–आधारित प्रशिक्षण, और बाज़ार–सम्पर्क** के अवसर प्रदान करता रहेगा।

8. सम्मान, प्रेरणा एवं सामाजिक पहलू

कार्यक्रम में उन 15 किसानों को विशेष रूप से सम्मानित किया गया, जिन्होंने उन्नत किस्म PM 30 के **उदाहरणीय प्रदर्शन प्लॉट** लगाए थे और अनुशंसित तकनीकी पैकेज–ऑफ–प्रैक्टिस का अधिकतम पालन किया। यह सम्मान अन्य किसानों के लिए प्रेरणा–स्रोत बना।

स्थानीय नेताओं एवं जनप्रतिनिधियों ने किसानों को **नई तकनीकों को अपनाने, सामूहिक प्रयासों के माध्यम से उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने, और FPO/SHG जैसे सामुदायिक संस्थानों से जुड़ने** के लिए प्रेरित किया।

कई महिला किसानों एवं युवाओं की उपस्थिति उल्लेखनीय रही, जो यह संकेत देती है कि नई पीढ़ी भी कृषि–आधारित नवाचारों में रुचि ले रही है और तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रमों को गंभीरता से अपना रही है।

9. कार्यक्रम के मुख्य निष्कर्ष

नई किस्म के प्रति उत्साह
अधिकांश किसानों ने PM 30 को फसल प्रदर्शन देखकर सराहा और आगामी सीज़न में इस किस्म को बड़े क्षेत्र में अपनाने की इच्छा व्यक्त की।

तकनीकी पैकेज का बेहतर अनुपालन
किसान पाठशाला, KVK एवं विभागीय प्रशिक्षण के कारण बीज उपचार, कतारों में बुवाई, उर्वरक

संतुलन और कीट–रोग प्रबंधन की अनुशंसित तकनीकों का अनुपालन उल्लेखनीय रूप से बेहतर रहा।

उत्पादन वृद्धि की संभावना
किसानों तथा विशेषज्ञों की संयुक्त समीक्षा से यह संकेत मिला कि पारंपरिक किस्मों की तुलना में PM 30 से लगभग **30–40 प्रतिशत तक अधिक उत्पादन** प्राप्त करने की संभावना है, यदि अनुशंसित तकनीकों का पालन किया जाए और मौसम अनुकूल हो।

संस्थागत समन्वय मजबूत होना
मध्य भारत कंसोर्टियम, KVK, कृषि विभाग एवं ATMA के बीच समन्वित प्रयासों से किसानों तक जानकारी और सेवाएँ अधिक प्रभावी ढंग से पहुँच पाईं। यह भविष्य के कार्यक्रमों के लिए एक अच्छा मॉडल है।

समूह आधारित विस्तार की आवश्यकता
किसानों ने सुझाव दिया कि FPO एवं SHG के माध्यम से सामूहिक बीज–खरीद, इनपुट प्रबंधन तथा आउटपुट मार्केटिंग पर भी कार्य किया जाए, ताकि उत्पादन के साथ–साथ बाज़ार–दाम भी बेहतर मिल सकें।

10. भविष्य की कार्ययोजना एवं सुझाव

बीज विस्तार एवं क्षेत्र विस्तार
अगले सीज़न में **पूसा सरसों 30 (PM 30)** के **बीज विस्तार कार्यक्रम** को बढ़ाकर अधिक किसानों एवं अधिक ग्रामों को कवर किया जाए। इसके लिए FPO, सहकारी समितियाँ एवं निजी–प्रसंस्करण इकाइयों के माध्यम से बीज उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती है।

सम्पूर्ण पैकेज–ऑफ–प्रैक्टिस पर आवर्ती प्रशिक्षण

- मृदा परीक्षण आधारित पोषण प्रबंधन,
- IPM/IPNM पर विशेष प्रशिक्षण,
- जल–संसाधन प्रबंधन एवं सूक्ष्म सिंचाई,
- कटाई–पश्चात प्रबंधन एवं मूल्य संवर्धन (ऑयल एक्सट्रैक्शन, ब्रांडिंग) पर चरणबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।

FPO आधारित सरसों वैल्यू–चेन विकास
मध्य भारत कंसोर्टियम एवं स्थानीय FPOs के माध्यम से सरसों की **संग्रहण, प्राथमिक प्रसंस्करण, ग्रेडिंग, पैकिंग एवं ब्रांडेड बिक्री** की व्यवस्था की जाए, ताकि किसानों को उत्पादन के साथ विपणन में भी अतिरिक्त लाभ मिल सके।

फील्ड मॉनिटरिंग एवं डाटा–संग्रह
PM 30 पर किए गए प्रदर्शन प्लॉटों का **उपज, लागत, लाभ, B:C अनुपात** आदि का व्यवस्थित आंकड़ा

संकलित कर रिपोर्ट तैयार की जाए, जिससे नीति निर्माण एवं बड़े स्तर पर विस्तार के निर्णयों में मदद मिले।

स्थायी सहयोग एवं हेल्प–डेस्क
मध्य भारत कंसोर्टियम के स्तर पर एक **तकनीकी हेल्प–डेस्क/कॉल सेंटर** अथवा वाट्सऐप समूह विकसित किया जाए, जहाँ किसान मौसम, रोग–कीट, बाज़ार भाव और तकनीकी सलाह से संबंधित त्वरित जानकारी प्राप्त कर सकें।

11. निष्कर्ष

ग्राम सुमावली में आयोजित किसान प्रक्षेत्र दिवस ने किसानों को नई किस्म **पूसा सरसों 30 (PM 30)** के बारे में गहन जानकारी प्रदान की। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन और वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन ने किसानों को प्रत्यक्ष अनुभव दिया। विभागीय योजनाओं और तकनीकी सहयोग से किसानों को प्रेरणा मिली कि वे सामूहिक प्रयासों के माध्यम से क्षेत्र में सरसों उत्पादन बढ़ाएँ।

ग्राम सुमावली, जौरा, मुरैना में आयोजित किसान प्रक्षेत्र दिवस – **पूसा सरसों 30 (PM 30)** कार्यक्रम ने किसानों को नई किस्म की वास्तविक संभावनाओं से परिचित कराने, वैज्ञानिक प्रबंधन तकनीकों का व्यवहारिक प्रशिक्षण देने और संस्थागत सहयोग की भावना को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन प्लॉटों पर देखी गई फसल की उत्कृष्ट स्थिति तथा अपेक्षित **40 प्रतिशत तक संभावित उत्पादन वृद्धि** के संकेतों ने किसानों के बीच उत्साह और विश्वास दोनों को बढ़ाया।

मध्य भारत कंसोर्टियम, KVK, कृषि विभाग एवं ATMA के संयुक्त प्रयासों से यह कार्यक्रम क्षेत्रीय सरसों उत्पादन में गुणात्मक एवं मात्रात्मक सुधार की दिशा में एक सशक्त कदम साबित हुआ है। यदि सुझाए गए कदमों के अनुरूप बीज विस्तार, तकनीकी प्रशिक्षण, FPO–आधारित वैल्यू–चेन विकास और सतत तकनीकी सहयोग की प्रक्रिया जारी रही, तो न केवल किसानों की आय में महत्वपूर्ण वृद्धि होगी, बल्कि क्षेत्र में तिलहन उत्पादन को नई दिशा और स्थायित्व भी प्राप्त होगा।

मध्य भारत कंसोर्टियम ने किसानों को आश्वासन दिया कि उन्हें निरंतर तकनीकी सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलता रहेगा। इस प्रकार यह कार्यक्रम किसानों के लिए अत्यंत उपयोगी और प्रेरणादायी सिद्ध हुआ।